INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 3, March 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि

डॉ. नीतू व्यास
शोध मार्गदर्शक
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयुपर (राज.)

शबाना कुरैशी
पीएच.डी. शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ
(डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय) उदयुपर (राज.)

सार–संक्षेप

प्रस्तुत शोध ''विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि'' उदयपुर संभाग की 600 मुस्लिम महिलाओं पर आधारित है, जिसमें जीवन सन्तुष्टि को उनके जीवन की सफलता और सार्थकता हेतु निर्धारित मानदंडों के अनुरूप किए गए प्रयासों से प्राप्त संतोष के रूप में समझा गया है। सर्वेक्षण विधि और मानकीकृत जीवन सन्तुष्टि मापनी के माध्यम से किए गए अध्ययन का उद्देश्य विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का अध्ययन एवं तुलना करना था। निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि अपेक्षाकृत कम पारिवारिक दायित्वों के कारण अविवाहित मुस्लिम महिलाएँ व्यक्तिगत लक्ष्यों और कार्यक्षेत्र में अधिक एकाग्रता व उन्नति प्राप्त करती हैं, जिससे उनकी कार्य एवं व्यक्तिगत सन्तुष्टि अधिक होती है, जबकि विवाहित मुस्लिम महिलाएँ सामाजिक दायित्वों और गतिविधियों में अधिक भागीदारी निभाने के कारण सामाजिक सन्तुष्टि के उच्च स्तर का अनुभव करती हैं। यह अध्ययन मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि को समझने के साथ–साथ उनके सशक्तिकरण और समावेशी विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

मुख्य शब्द :– *मुस्लिम महिला, जीवन सन्तुष्टि।*

प्रस्तावना :–

संतुष्टि अथवा संतोष वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपनी वर्तमान परिस्थितियों, जीवन की गुणवत्ता, उपलब्धियों और सामाजिक संबंधों से प्रसन्नता का अनुभव करता है। जीवन संतुष्टि एक बहुआयामी संकल्पना है, जो व्यक्तिगत अनुभवों के साथ–साथ सामाजिक संबंधों, आर्थिक स्थिति, शिक्षा, स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आत्म–सम्मान से गहराई से जुड़ी होती है। डायनर (1984) के अनुसार जीवन संतुष्टि व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन के कल्याण और गुणवत्ता का उसके चुने हुए मानदंडों के आधार पर मूल्यांकन है, जबकि ब्राउन (1981) ने इसे एक गतिशील प्रक्रिया माना है जो पूरे जीवन में निरंतर चलती रहती है।

विशेष रूप से महिलाओं की जीवन संतुष्टि समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण संकेतक है और भारत जैसे विविध समाज में मुस्लिम महिलाओं की जीवन संतुष्टि का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, क्योंकि वे सामाजिक प्रतिबंधों, चुनौतियों और अवसरों के बीच संतुलन बनाते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करती हैं। उनकी जीवन संतुष्टि व्यक्तिगत इच्छाओं की पूर्ति, सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता व सुरक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, आत्म–सम्मान तथा आशाओं की प्राप्ति पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध में जीवन संतुष्टि से आशय उदयपुर संभाग की विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं द्वारा अपने जीवन की सफलता और सार्थकता हेतु निर्धारित मानदंडों के अनुरूप किए गए प्रयासों से प्राप्त संतोष से है। मुस्लिम महिलाओं की जीवन संतुष्टि को समझना और उसे सुदृढ़ बनाना एक सामूहिक सामाजिक उत्तरदायित्व है, क्योंकि शिक्षा, रोजगार, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के अवसर उन्हें न केवल आत्मनिर्भर और संतोषजनक जीवन की ओर ले जाते हैं, बल्कि समावेशी विकास और राष्ट्र की समृद्धि में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

शीर्षक :–

''विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि''

उद्देश्य :–

1. उदयपुर संभाग की मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. उदयपुर संभाग की विवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. उदयपुर संभाग की अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का अध्ययन करना।

4. उदयपुर संभाग की विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि की तुलना करना।

परिकल्पना :–

1. उदयपुर संभाग की विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

विधिशास्त्र :–

शोधार्थी द्वारा उदयपुर संभाग के अंतर्गत आने वाले छः जिलों यथा – उदयपुर, राजसमंद, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ में प्रत्येक से 100–100 मुस्लिम महिलाओं का चयन करते हुए कुल 600 मुस्लिम महिलाओं को शोध में शामिल किया गया है, जिसमें 300 महिलाएँ विवाहित एवं 300 महिलाएँ अविवाहित है। शोध की प्रकृति के अनुसार सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। दत्त संकलन हेतु डॉ. सपना व सावित्री शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत जीवन सन्तुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के लिये प्रतिशत मध्यमान, मध्यमान, मानक विचलन व टी–परीक्षण सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

संकलित दत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार से की गई है:–

सारणी संख्या – 1

उदयपुर संभाग की मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का प्रतिशत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	जीवन सन्तुष्टि के आयाम	प्रतिशत मध्यमान	वरीयता क्रम
1.	व्यक्तिगत सन्तुष्टि	88.48	I
2.	सामाजिक सन्तुष्टि	76.79	II
3.	कार्य सन्तुष्टि	69.81	III

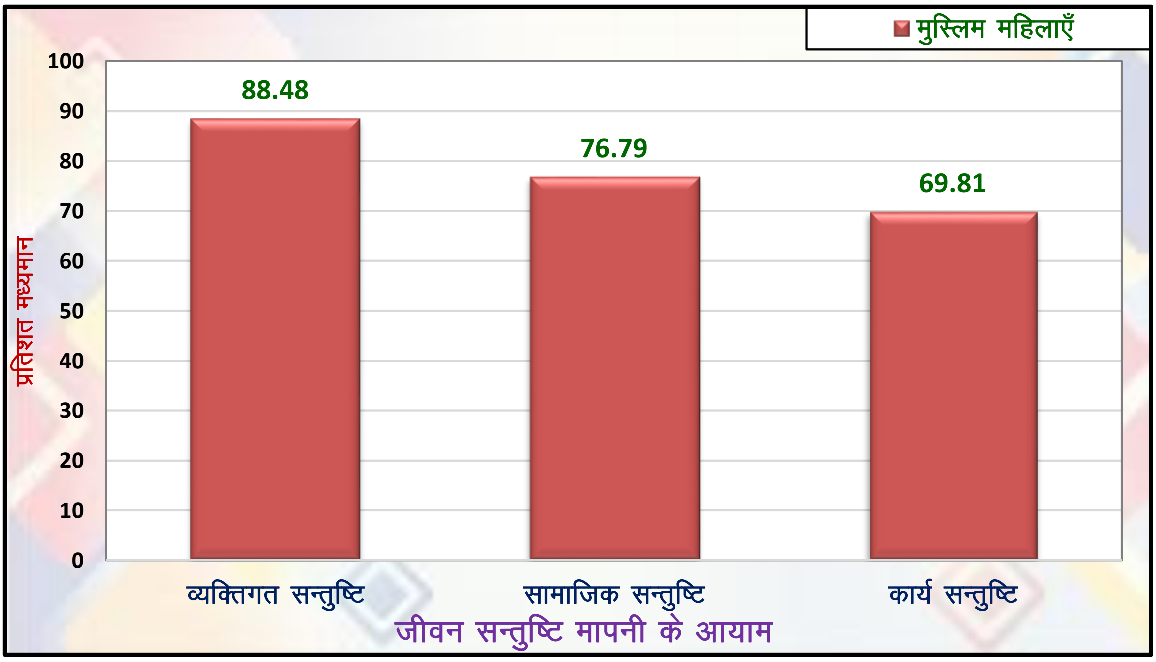

व्याख्या :– उदयपुर संभाग की मुस्लिम महिलाओं की जीवन संतुष्टि के विभिन्न आयामों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत सन्तुष्टि को सर्वाधिक महत्व प्राप्त है, जिसका प्रतिशत मध्यमान 88.48 रहा और यह वरीयता क्रम में प्रथम स्थान पर है। इसके पश्चात् सामाजिक सन्तुष्टि का स्थान है, जिसका प्रतिशत मध्यमान 76.79 प्राप्त हुआ और यह द्वितीय स्थान पर रही, जबकि कार्य–सन्तुष्टि का प्रतिशत मध्यमान 69.81 रहा, जो वरीयता क्रम में तृतीय स्थान पर है। इससे यह संकेत मिलता है कि उदयपुर संभाग की मुस्लिम महिलाओं के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक पक्ष जीवन संतुष्टि में कार्यक्षेत्र की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण हैं।

INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 3, March 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

सारणी संख्या – 2

उदयपुर संभाग की विवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का प्रतिशत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	जीवन सन्तुष्टि के आयाम	प्रतिशत मध्यमान	वरीयता क्रम
1.	व्यक्तिगत सन्तुष्टि	90.51	I
2.	सामाजिक सन्तुष्टि	78.84	II
3.	कार्य सन्तुष्टि	71.66	III

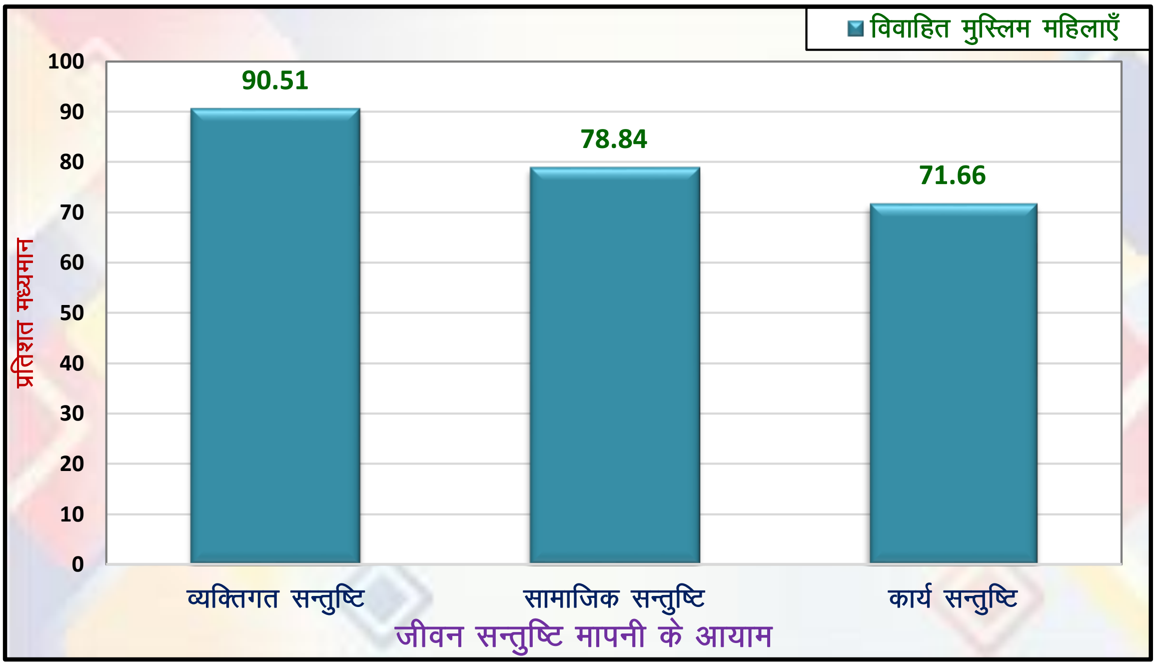

व्याख्या :– उदयपुर संभाग की विवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि के विभिन्न आयामों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि व्यक्तिगत सन्तुष्टि का स्तर सर्वाधिक है, जिसका प्रतिशत मध्यमान 90.51 प्राप्त हुआ और यह वरीयता क्रम में प्रथम स्थान पर है। इसके पश्चात् सामाजिक सन्तुष्टि का स्थान है, जिसका प्रतिशत मध्यमान 78.84 रहा और यह द्वितीय स्थान पर रही, जबकि कार्य–सन्तुष्टि का प्रतिशत मध्यमान 71.66 प्राप्त हुआ, जो वरीयता क्रम में तृतीय स्थान पर है। इससे स्पष्ट होता है कि विवाहित मुस्लिम महिलाओं के लिए जीवन सन्तुष्टि में व्यक्तिगत एवं सामाजिक आयामों का महत्व कार्य–सन्तुष्टि की अपेक्षा अधिक है।

सारणी संख्या – 3

उदयपुर संभाग की अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का प्रतिशत मध्यमान के आधार पर विश्लेषण

क्र.सं.	जीवन सन्तुष्टि के आयाम	प्रतिशत मध्यमान	वरीयता क्रम
1.	व्यक्तिगत सन्तुष्टि	84.46	I
2.	सामाजिक सन्तुष्टि	69.37	III
3.	कार्य सन्तुष्टि	81.55	II

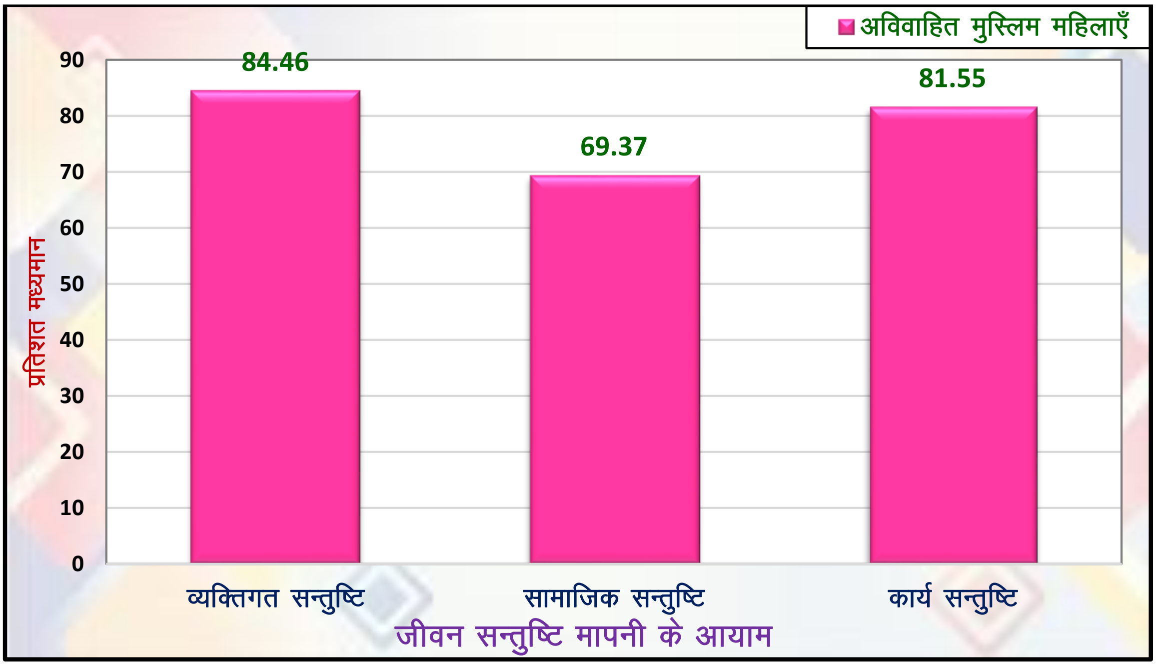

व्याख्या :— उदयपुर संभाग की अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि के विभिन्न आयामों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत सन्तुष्टि का स्तर सर्वाधिक है, जिसका प्रतिशत मध्यमान 84.46 प्राप्त हुआ और यह वरीयता क्रम में प्रथम स्थान पर है। इसके पश्चात् कार्य—सन्तुष्टि का स्थान है, जिसका प्रतिशत मध्यमान 81. 55 रहा और यह द्वितीय स्थान पर रही, जबकि सामाजिक सन्तुष्टि का प्रतिशत मध्यमान 69.37 प्राप्त हुआ, जो वरीयता क्रम में तृतीय स्थान पर है। इससे संकेत मिलता है कि अविवाहित मुस्लिम महिलाओं के लिए व्यक्तिगत और कार्य—संबंधी पहलू जीवन सन्तुष्टि में सामाजिक आयाम की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं।

सारणी संख्या — 4

उदयपुर संभाग की विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि का टी—मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

क्र. सं.	जीवन सन्तुष्टि के आयाम	मध्यमान		मानक विचलन		टी—मान	0.01 स्तर पर सार्थकता
		विवाहित मुस्लिम महिलाएँ	अविवाहित मुस्लिम महिलाएँ	विवाहित मुस्लिम महिलाएँ	अविवाहित मुस्लिम महिलाएँ		
1.	व्यक्तिगत सन्तुष्टि	94.98	105.95	9.76	16.62	9.86	सार्थक अन्तर पाया गया
2.	सामाजिक सन्तुष्टि	66.72	59.89	6.45	10.71	9.46	सार्थक अन्तर पाया गया
3.	कार्य सन्तुष्टि	98.19	109.94	9.23	16.55	10.74	सार्थक अन्तर पाया गया

स्वतंत्रता के अंश = 598
0.05 विश्वास स्तर का मान = 1.97
0.01 विश्वास स्तर का मान = 2.58

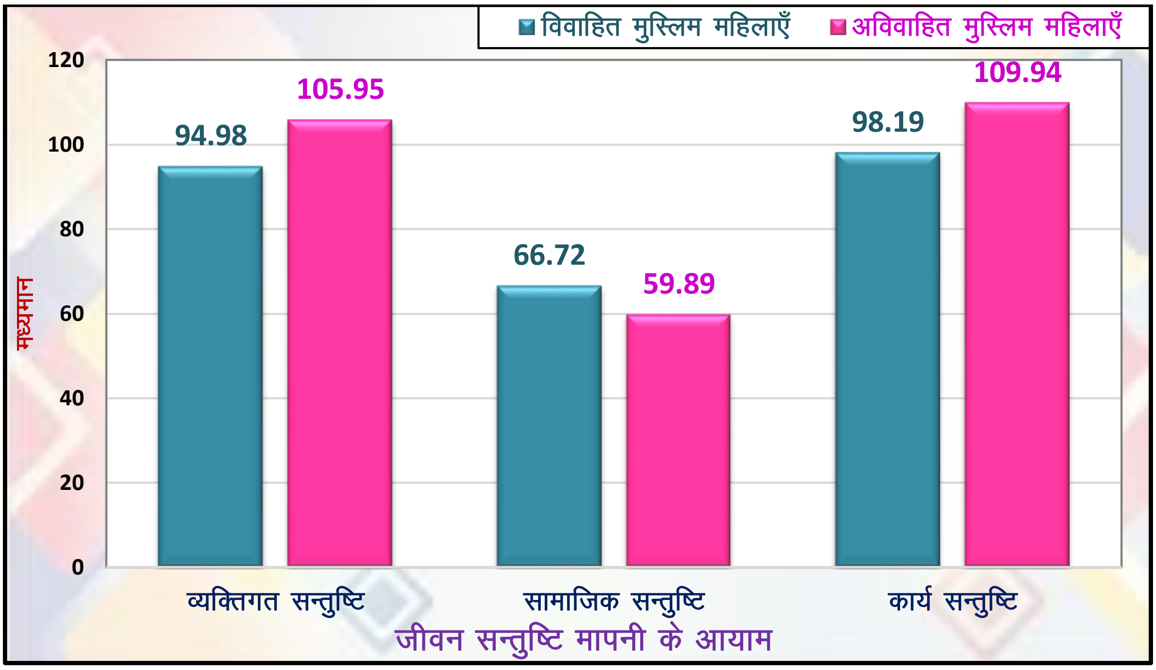

विश्लेषण :– उदयपुर संभाग की विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि के क्षेत्रवार विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत, सामाजिक तथा कार्य सन्तुष्टि तीनों ही क्षेत्रों में दोनों समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर पाया गया है। व्यक्तिगत सन्तुष्टि के क्षेत्र में विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं के मध्यमान क्रमशः 94.98 और 105.95 तथा मानक विचलन 9.76 और 16.62 रहे, जहाँ प्राप्त टी–मान 9.86 (0.01 स्तर पर सारणीमान 2.58 से अधिक) यह दर्शाता है कि अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की व्यक्तिगत सन्तुष्टि विवाहित महिलाओं की अपेक्षा अधिक है। सामाजिक सन्तुष्टि के क्षेत्र में विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं के मध्यमान क्रमशः 66.72 और 59.89 तथा मानक विचलन 6.45 और 10.71 पाए गए और टी–मान 9.46 ने यह स्पष्ट किया कि विवाहित मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक सन्तुष्टि अविवाहित महिलाओं से अधिक है। इसी प्रकार कार्य सन्तुष्टि के क्षेत्र में विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं के मध्यमान क्रमशः 98.19 और 109.94 तथा मानक विचलन 9.23 और 16.55 रहे, जहाँ टी–मान 10.74 (0.01 स्तर पर) से यह सिद्ध होता है कि अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि विवाहित महिलाओं की तुलना में अधिक है।

मुख्य निष्कर्ष :–

उदयपुर संभाग की मुस्लिम महिलाएँ जीवन में सर्वाधिक प्राथमिकता व्यक्तिगत सन्तुष्टि को देती हैं, जिसमें परिवार, पति–पत्नी संबंध तथा बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य प्रमुख भूमिका निभाते हैं। इसके पश्चात् वे सामाजिक सन्तुष्टि को महत्व देती हैं, जहाँ सामाजिक मान–सम्मान, सुरक्षित सामाजिक वातावरण और सामाजिक सुरक्षा उनके संतोष का आधार बनते हैं। इसके विपरीत, कार्य सन्तुष्टि के प्रति उनकी प्राथमिकता अपेक्षाकृत कम पाई गई है, जिसका मुख्य कारण पारिवारिक दायित्वों के चलते कार्यस्थल पर स्वतंत्रता, समय प्रबंधन और निर्णय–क्षमता का सीमित होना है।

शोध निष्कर्ष :–

- अविवाहित मुस्लिम महिलाओं पर परिवार से अपेक्षाकृत कम दायित्व होने के कारण विवाहित मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा व्यक्तिगत लक्ष्य, रुचियाँ और भविष्य की योजनाएँ सरलता से पूर्ण हो जाती है।
- विवाहित मुस्लिम महिलाएं सामाजिक दायित्व अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा अधिक निभाती है व सामाजिक कार्यक्रमों में अधिक भाग लेती है जिससे उनकी सामाजिक सन्तुष्टि अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा अधिक होती है।

- अविवाहित मुस्लिम महिलाएं कार्यस्थल पर पूर्ण एकाग्रता के साथ काम करती है जिससे उनका व्यावसायिक उन्नयन विवाहित मुस्लिम महिलाओं की अपेक्षा अधिक होता है व अन्य परिलाभ भी प्राप्त होते जिसके फलस्वरूप कार्यसन्तुष्टि का स्तर भी उच्च होता है।

प्रासंगिकता :–

शोध निष्कर्षों के आलोक में यह अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह विवाहित एवं अविवाहित मुस्लिम महिलाओं की जीवन सन्तुष्टि के विभिन्न आयामों व्यक्तिगत, सामाजिक और कार्य में विद्यमान वास्तविकताओं को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। अध्ययन से प्राप्त तथ्य यह संकेत देते हैं कि पारिवारिक संरचना, सामाजिक भूमिकाएँ और कार्यदायित्व महिलाओं की सन्तुष्टि को भिन्न–भिन्न रूपों में प्रभावित करते हैं, जिसे समझना महिला सशक्तिकरण, मानसिक स्वास्थ्य, कार्य–जीवन संतुलन तथा सामाजिक समावेशन की दृष्टि से आवश्यक है। वर्तमान में जब महिला सहभागिता शिक्षा, रोजगार और सामाजिक निर्णयों में निरंतर बढ़ रही है, तब ऐसे शोध नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों और सामाजिक संस्थाओं को लक्षित योजनाएँ, परामर्श सेवाएँ और सहयोगात्मक कार्यक्रम विकसित करने में उपयोगी आधार प्रदान करते हैं, जिससे मुस्लिम महिलाओं की समग्र जीवन सन्तुष्टि एवं सामाजिक विकास को सुदृढ़ किया जा सके।

सन्दर्भ :–

ढ़ोढ़ियाल, एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (1972). *शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र.* जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

हेनरी, ई. गेरिट (1979). *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग.* (अनुवादित संस्करण) नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स।

भार्गव, महेश चन्द्र (1984). *आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन.* आगरा : हर प्रसाद भार्गव।

भटनागर, सुरेश (1997). *आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ.* मेरठ : लाल बुक डिपो।

Koul, Lokesh (1984). *Methodology of Educational Research.* Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

Sharma, Dr. Sapna and Sharma, Savitri (2020). *Teacher's Life-Satisfaction Scale.* Agra : National Psychological Corporation, Kacheri Ghat.

Skinner, Charles E. (1988). *Elementary Educational Psychology.* New Delhi: Surjeet Publications.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.